315hi28

28

20वीं शताब्दी में परिवर्तन

बीसवीं सदी को प्रायः बोल्शेविक क्रांति, विश्व युद्धों, फासिज्म और एशियन और अफ्रीकन राष्ट्रों के उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र होने जैसी मुख्य ऐतिहासिक घटनाओं के कारण याद किया जाता है।

चित्र 28.1.1 बोलशेविक क्रांति किले पर पत्थरबाजी

चित्र 28.1.2 अफ्रीका की स्वतंत्रता

चित्र 28.1.3 पर्ल हार्बर पर आक्रमण द्वितीय विश्व युद्ध

चित्र 28.1.4 इटली में फासिस्टवाद

चित्र 28.1.5 इथियोपिया का स्वतंत्रता आंदोलन

चित्र 28.1.6 प्रथम विश्व युद्ध में एक खाई

यह सभी विकास निस्संदेह निर्णायक थे और इन्होंने समसामयिक विश्व पर अपना बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा। तथापि, यह जानना दिलचस्प है कि समाज में आए परिवर्तन किन्हीं नाटकीय घटनाओं के परिणाम नहीं हैं, बल्कि अर्थव्यवस्था, संस्कृति और जनसांख्यिकीय में धीरे–धीरे आए दीर्घकालिक परिवर्तनों का भी परिणाम हैं। बीसवीं शताब्दी के दौरान ऐसे भी अनेक परिवर्तन देखने में आए जो उस काल के व्यक्तियों की प्रत्यक्ष कल्पना में नहीं आ सके, परन्तु जिन्होंने अंत में, विश्व के वर्तमान रूप को आकार देने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

आपकी टिप्पणियाँ

पिछले पाठ में आपने ऐसी अनेक विकासशील घटनाओं के संबंध में पढ़ा जिनमें जनसांख्यिकीय विस्फोट, तेज गति से आया शहरीकरण और पिछली सदी के दौरान मध्य और कामगार वर्गों मे आया चमत्कारिक विकास शामिल है।

विभिन्न देशों के सामाजिक ढाँचों या उनके प्रमुख सामाजिक समूहों के परस्पर संबंधों में इसी प्रकार के परिवर्तन; सांस्कृतिक परिवर्तन, यानी लोगों के मूल्यों, व्यवहारों, कलात्मक रुचियों इत्यादि में भी इसी अवधि के दौरान धीरे–धीरे और दीर्घकालिक परिवर्तन देखने में आए। अगले पाठ में हम इनमें से कुछ सांस्कृतिक परिवर्तनों के संबंध में विस्तृत विचार–विमर्श करने का प्रयास करेंगे और यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि क्या इन परिवर्तनों ने वर्तमान व्यापक साझा वैश्विक संस्कृति का विकास किया है या संस्कृतियों के बीच और अधिक तनाव और मन–मुटाव आए हैं।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप:

- संस्कृति शब्द के विभिन्न अभिप्रायों की व्याख्या कर सकेंगे;
- संस्कृति के विशेष लक्षणों पर प्रकाश डाल सकेंगे और संस्कृति की समस्याओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- बीसवीं सदी के दौरान विज्ञान, कला, धर्म, शिक्षा, मीडिया, मनोरंजन और व्यवहार और मूल्यों में आए मुख्य परिवर्तनों का संक्षिप्त वर्णन कर सकेंगे, और
- 'वैश्वीकरण' अथवा एकीकृत विश्व अर्थव्यवस्था और संस्कृति तथा वर्तमान में पश्चिमी वर्चस्व के सतत विरोध के बीच संतुलन का आकलन कर सकेंगे।

28.1 संस्कृति की परिभाषा

परन्तु इससे पहले कि हम 20वीं सदी में आये सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझें, यह लाभकारी होगा कि विभिन्न शास्त्रों में दिए गए संस्कृति शब्द के विभिन्न अर्थों को हम ध्यान से जाँच परख लें। वास्तव में 'संस्कृति' शब्द सामाजिक विज्ञानों में सबसे जटिल शब्द है। न सिर्फ इसलिए कि यह शब्द रीति–रिवाजों, आदतों, मूल्यों इत्यादि जैसे व्यापक स्वभाविक गुणों की ओर संकेत करता है जिन्हें आंकना या उनके परिणाम निर्धारित करना कठिन है परन्तु इसलिए कि इस शब्द को विभिन्न विद्वानों द्वारा अनेक अर्थों में प्रयोग में लाया गया है। उदाहरण के लिए, सरकारी घोषणाओं और समाचार बुलैटिनों में संस्कृति शब्द का उपयोग प्रायः कलात्मक सृजनात्मकता और बौद्धिक सफलताओं का उल्लेख करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार शास्त्रीय तथा लोक संगीत, नृत्यों की किस्मों, साहित्य इत्यादि के जरिए दर्शाए जाने वाली भारतीय संस्कृति के लिए भी इसी शब्द का प्रयोग किया जाता है।

इस धारणा से थोड़ा हटकर, मानवविज्ञानी (एन्थ्रोपॉलोजिस्ट) संस्कृति शब्द को किसी भी समुदाय के संपूर्ण जीवन के हर पक्ष, जैसे–खान–पान, वेश–भूषा, काम और खाली समय व्यतीत करने की दिनचर्या के साथ–साथ लोकप्रिय परम्पराओं, त्योहारों इत्यादि को

व्यक्त करने के लिए प्रयोग करते हैं। इस प्रकार के प्रयोग में दृष्टि महान कलाकारों अथवा विचारकों की विशिष्ट या उत्कृष्ट उपलब्धियों पर अधिक नहीं होता है परन्तु उनके दिन–प्रतिदिन के कार्यों पर होता है जिनमें समुदाय पारंपरिक रूप से सम्मिलित रहा है अथवा उन्हें स्वीकृत किया जाता रहा है। अतः इस परिभाषा के अनुसार भारतीय संस्कृति के अध्ययन में दृष्टि हमारे लोकप्रिय त्योहारों, धार्मिक परंपराओं और जाति व्यवस्था पर होगा।

एक अन्य परिभाषा में संस्कृति शब्द में समाहित हैं किसी समुदाय के निहित मूल्य, विश्वास और आचार–व्यवहार जो सभी के साझे हों या जो किसी समुदाय की मुख्य विशेषता के रूप में समझे और पहचाने जाते हों। अतः इस प्रकार भारतीय संस्कृति में पारंपरिक पारिवारिक बंधनों का और बड़ों के सम्मान का महत्त्व पश्चिमी विश्व से कहीं अधिक है जहाँ पर बच्चे विवाह के पश्चात अपने माता–पिता को छोड़ देते हैं और उनके वैवाहिक बंधन भी बहुत नाजुक होते हैं। ऐसी मानसिकताओं या आदर्शों और विश्वास पद्धतियों के सरोकारों के विपरीत, पुरातत्वविज्ञानी प्राचीन समुदायों की भौतिक संस्कृति' (मैटीरियल कल्चर) या आमतौर पर प्रयोग में लाई जाने वाली शिल्पकृतियों, जैसे–मिट्टी के बर्तन, आभूषण और भवन इत्यादि पर अधिक केन्द्रित हैं जिनके अवशेषों को खुदाइयों के जरिए ढूँढने का प्रयास करते हैं।

यदि आपको पीछे दी गई परिभाषाओं की ध्यानपूर्वक समीक्षा करनी हो तो आप नोट करेंगे कि किसी भी संस्कृति का अध्ययन मस्तिष्क में दो विभिन्न मानदंडों के आधार पर किया जा सकता है : एक ओर कलात्मक और बौद्धिक परिष्करण और दूसरी ओर एतिहासिक रूप से की गई सह–भागीदारी अथवा लोकप्रिय परंपराएँ। दूसरे मानदंडों की भी विभिन्न स्तरों पर पहचान की जा सकती है : भौतिक वस्तुएँ, प्रथाएँ या मूल्यों और व्यवहारों में।

संस्कृति के इन बहुआयामी पहलुओं का अनुसरण करते हुए अब हम विज्ञान, कला, मनोरंजन, मूल्य, धर्म और शिक्षा से संबंधित क्षेत्रों के कुछ असाधारण विकासों के संबंध में पढ़ेंगे जो कि 20वीं शताब्दी के दौरान देखने में आयी थी।

1. बीसवीं शताब्दी के दौरान दिखाई देने वाले, क्रांतिकारी और धीमी प्रकृति के परिवर्तनों के दो उदाहरण दीजिए।
2. संस्कृति शब्द की विभिन्न परिभाषाओं के समान और विरोधी लक्षणों का उल्लेख करें। क्या आप इन परिभाषाओं में कुछ सामान्य विशेषताओं का पता लगा सकते हैं?
3. सामाजिक विज्ञानों में संस्कृति शब्द एक जटिल अभिव्यक्ति क्यों है?

28.2 विज्ञान और प्रौद्योगिकी

बीसवीं शताब्दी की अत्यधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में शायद विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास रहा है जिसने उस अवधि के दौरान मनोरंजन और शिक्षा से लेकर परिवहन और संचार तक जीवन के हर पक्ष को तीव्र गति से प्रभावित और परिवर्तित किया। पिछली सदी के दौरान आधुनिक प्रौद्योगिकी ने कारें एवं वायुयान, रेडियो और ट्रांजिस्टर, फिल्में तथा टेलीविजन, कैलक्यूलेटर एवं कम्प्यूटर, सैटेलाइट और मोबाइल फोन तथा लेजर एवं अंग प्रत्यारोपण कुछेक ऐसे नए उत्पाद और सेवाएँ उपलब्ध कराईं। इन प्रौद्योगिकी आविष्कारों के इस महासमुद्र के पीछे विविध वैज्ञानिक क्षेत्रों, जैसे–सब–एटॉमिक

फिजिक्स, आनुवंशिकी और अणु जीवविज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान में जटिल विकास हुए हैं। इन क्षेत्रों में प्रमुख खोजें करने वाले कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं, मैडम क्यूरी, अलबर्ट आईंस्टाइन, फिनमैन और होमी जे भाभा।

चित्र 28.2.1 मैडम क्यूरी, रेडियो एक्टिविटी की खोज

चित्र 28.2.2 रिचर्ड पी फिनमैन

चित्र 28.2.3 अलबर्ट आइंस्टाइन, परमाणु वैज्ञानिक

चित्र 28.2.4 होमी जे भाभा, परमाणु वैज्ञानिक

परन्तु कुल मिलाकर हाल ही में हुए वैज्ञानिक विकास किसी एक प्रतिभाशाली व्यक्ति की प्रगति नहीं हैं बल्कि विश्व के विभिन्न देशों और विकसित देशों खासतौर से अमरीका में अत्यधिक वित्त पोषित अनुसंधान केन्द्रों के वैज्ञानिकों की प्रगति का परिणाम हैं।

यह ध्यान देना भी महत्त्वपूर्ण है कि जबकि समकालीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने जनसामान्य को अत्यन्त लाभ पहुँचाया है, फिर भी लोगों में विज्ञान के प्रति आशंका और भय उत्पन्न हुए हैं। आंशिक तौर पर ऐसा शिक्षित जन सामान्य का आधुनिक विज्ञान की नवीनतम उन्नतियों की अज्ञानता के कारण हुआ है।

पहले से अधिक विध्वंसक हथियारों का निर्माण करने की इसकी शक्ति ने आधुनिक विज्ञान को शायद और अधिक खौफनाक बनाया है और यह पृथ्वी के संवेदनशील पारिस्थितिकीय संतुलन के लिए चुनौती है।

वर्तमान युग में वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने और उनका स्पष्टतया संचालन करने की वैज्ञानिकों और सरकारों की सामाजिक जवाबदेही और जिम्मेदारी बहुत अधिक है।

कला और साहित्य

विज्ञान के अतिरिक्त, बीसवीं शताब्दी कला के रूपों, जैसे–चित्रकला, संगीत और साहित्य और कुछ नवीनतम कलात्मक माध्यमों, जैसे–सिनेमा और रिकॉर्ड किए गए संगीत में भी महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई है।

इस अवधि के दौरान संपूर्ण राष्ट्रों में नये सृजनात्मक कार्य को दिशा देने वाले कुछ मुख्य कला आंदोलनों में आधुनिकतावाद, सामाजिक यथार्थवाद और उत्तर–आधुनिकतावाद थे।

वास्तव में आधुनिकतावाद उन्नीसवीं सदी की अंतिम चौथाई अवधि (क्वार्टर) के दौरान यूरोप में अग्रणी लेखक वर्ग या अग्रणी कला प्रवृत्ति के रूप में विकसित हुआ और उसने बीसवीं सदी में संपूर्ण विश्व पर प्रभाव डाला। यद्यपि आधुनिकतावाद की विभिन्न शाखाएँ

थीं, जैसे–प्रतीकवाद, प्रभाववाद और अतियथार्थवाद, परन्तु इन सभी में एक मुख्य सामान्य प्रवृत्ति थी कि प्रत्यक्ष विश्व में दिखाई दे रही वस्तुओं और व्यक्तियों को यथारूप में चित्रित करने के स्थान पर अवचेतन मन की भावनाओं और विचारों की गहराई को प्रकट करने पर बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त इस आधुनिक सरोकार को व्यक्तिनिष्ठ और अवचेतन तत्वों सहित अभिव्यक्ति देने के लिए, कलात्मक अभिव्यक्ति के पारंपरिक तरीकों को भी श्रेष्ठ बनाया गया और बार–बार साहसिक प्रयोगों को दोहराने का प्रयास किया गया। ये प्राय: एक साधारण दर्शक को अत्यन्त सूक्ष्म और अबोधगम्य लगने लगे थे।

इस प्रवृत्ति में अपनी निजी शैलियाँ विकसित करने वाले कुछ महान आधुनिकतावादी स्पेन के चित्रकार पाब्लो पिकासो जो चित्रकारी में आकृतियों के बहु–आयामी चित्र प्रस्तुत करने के लिए प्रसिद्ध थे। क्यूबिज्म आयरिश लेखक जेम्स जॉयस ने उलिसेस नामक अपनी पुस्तक में द स्ट्रीम ऑफ कॉन्शियसनेस की तकनीक प्रस्तुत की थी।

चित्र 28.3 पिकासो

विडम्बना, यह है कि अधिकांश आधुनिकतावादी अपने सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण की कलात्मक अभिव्यक्ति में नई शैलियां विकसित करने में अत्यंत साहसी और प्रौद्योगिकी दृष्टिकोण अपना रहे थे, वहीं उनमें से अनेक अपने समय की राजनीतिक चुनौतियों के प्रति बिल्कुल उदासीन रहे और समग्र रूप से आधुनिक सभ्यता या यहाँ तक कि मानवीय परिस्थितियों के प्रति गहरी निराशाजनक स्थिति में रहे।

तथापि, इसी अवधि के दौरान, कलाकारों के एक अन्य वर्ग ने सामाजिक यथार्थवाद की शैली के माध्यम से अपनी कला कृतियों में अधिक प्रगतिशीलता और सामाजिक परिवर्तनों के प्रति आशावादी दृष्टिकोण की कलात्मक अभिव्यक्ति की। जर्मनी में बर्टोल्ड ब्रेख्त और ब्रिटेन के जॉर्ज बर्नाड शॉ और रूस में मैक्सिम गोर्की जैसे उपन्यासकारों और अलेक्जेन्डर ब्लोक जैसे कवियों की इस प्रवृत्ति के दिशा निर्देशकों में गणना की जा सकती है। ये कवि और लेखक, समाज के समतावादी परिवर्तन के आदर्श से प्रेरित थे। बोल्शेविक क्रांति और सोवियत संघ के गठन ने अनेक लोगों को प्रेरित किया और कलात्मक प्रवृत्ति के रूप में सामाजिक यथार्थवाद ने इन्हें अनेक गैर–कम्युनिस्ट देशों में, जो कि समानान्तर रूप से उपनिवेशवाद, सामंतवाद और पूंजीवादी शोषण के हिंसक जाल में फंसे हुए थे, पर्याप्त भाग में सृजनात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उदाहरणतया भारत में 1940 में वामपंथियों के स्पष्ट समर्थन से मजाज और जोश जैसे प्रबुद्ध शायरों

ने और अन्य विद्वान लेखकों जैसे प्रेमचंद ने समकालीन ग्रामीण जीवन के सामजिक सरोकारों का बहुत ही गहन यथार्थवादी चित्रण किया। इसी प्रकार चीन में, लू हसुन जैसे प्रबुद्ध और महान यथार्थवादी लेखकों ने, जिनकी लेखकीय प्रवृत्तियाँ समाजवाद से प्रेरित थीं, अपनी महान कृतियाँ लिखीं जबकि लैटिन अमेरिका में संयुक्त राष्ट्र (यू एस) विरोधी प्रतिरोध ने पाब्लो नेरूदा के काव्य को प्रेरित किया।

वास्तव में 19वीं और 20वीं सदी के दौरान एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमरीकी देशों में कला और साहित्य की समृद्धि, हाल ही के वर्षों में हुए विकास में से एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विकास रहा है। इन देशों के कलाकारों ने एक ओर तो राष्ट्रीय महत्त्वाकांक्षाओं को अभिव्यक्ति दी और इसके साथ ही अपने समाजों में उभर रही सामंतवादी और पूँजीवादी शोषण की समस्याओं का भी सामना किया, वहीं दूसरी ओर तीव्र गति से आती आधुनिकीकरण की लहर के साथ–साथ अपनी परंपराओं के संश्लेषण की विशिष्ट चुनौतियों का भी सामना किया। सौ वर्ष पूर्व के प्रबुद्ध सृजनात्मक लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर से लेकर उपनिवेशवादी काल के बाद तक सृजित, लैटिन अमेरिका में गैब्रियल गर्सिया मर्कीज और अफ्रीका के चिनुआ ऐसीब की मधुर रचनाएँ, हाल ही में सृजित महान सर्जनात्मक साहित्यिक रचनाएँ हैं।

दर्शनशास्त्र और मानव विज्ञान

विद्यार्थियों के संदर्भ में, विश्वविद्यालयों के संकाय और प्रकाशनों की स्थितियों और मानव विज्ञानों (सामाजिक विज्ञान और मनोविज्ञान) में, बीसवीं सदी के दौरान और विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत अद्भुत विस्तार दृष्टिगोचर हुआ।

तथापि, प्रकाशनों के लिए बढ़ती होड़ और सामाजिक वैज्ञानिकों में हुई प्रगति के बढ़ते विस्तार के साथ–साथ विशेषज्ञता प्राप्त करने और विद्वता के लिए अपरिचित एवं क्लिष्ट तकनीकी शब्दों के प्रयोग और विशिष्ट शब्दावली के इस्तेमाल की प्रवृत्ति में भी बहुत वृद्धि हुई है, जो कि समकालीन शैक्षिक लेखन को पर्याप्त सीमा तक चित्रित करती है।

महान विचारक

चित्र 28.4.1 ई. वी. थाम्पसन

चित्र 28.4.2 अमर्त्य सेन

वास्तव में, सामाजिक और दर्शनशास्त्रीय जिज्ञासा की समग्र और गैर–विशेषज्ञतापूर्ण समझ से विशेषज्ञता पूर्ण अध्ययन के विषयों तक के उद्‌भव की जड़ों को हम उन्नीसवीं सदी के यूरोप में ढूँढ सकते हैं जब अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, मानव–विज्ञान और मनोविज्ञान धीरे–धीरे अपनी विशिष्ट पद्धतियों के साथ, पृथक अध्ययन विषयों के रूप में विकसित हुए और इन्होंने संबद्ध सरोकारों को विस्तृत बना दिया।

इसी दौरान, ए. जे. अय्यर और विटजेन्स्टीन जैसे विचारकों के प्रभाव के कारण दर्शनशास्त्र ने अपनी विचार दृष्टि की गति को नैतिकता और राजनीति के व्यापक प्रश्नों के अन्वेषण से भाषा और प्रतीकों, जिनके माध्यम से मुद्दों को व्यक्त किया जाता है, के स्पष्टीकरण के साथ और अधिक संकीर्ण और गहन सरोकार से जोड़ दिया।

इसका अभिप्राय यह नहीं है कि कार्यकारणता (कॉजेशन), मानव प्रकृति और परिवर्तनों से संबद्ध व्यापक प्रश्न, आज उठाये नहीं जा रहे हैं। बर्ट्रेन्ड रसेल, नोऐम चोम्स्की और लुईस आल्थुस्सर जैसे महान विचारकों ने सरोकारों के व्यापक संदर्भों से संबद्ध विषयों के संबंध में लेखन जारी रखा।

पाठगत प्रश्न 28.2.1

1. बीसवीं सदी के चार प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों के अनुसंधानों सहित, उनके नाम लिखें।

2. बीसवीं सदी के दौरान विभिन्न राष्ट्रों में हुए उन प्रमुख कला आंदोलनों के नाम लिखें, जिन्होंने सभी राष्ट्रों में कलाकारों और लेखकों को प्रभावित किया।

3. कुछ ऐसे विचारकों के नाम लिखें जिन्होंने ऐसे समय में नैतिक और राजनीतिक मुद्दों पर महत्त्वपूर्ण नवीन दृष्टिकोण से अपना लेखन जारी रखा जबकि गत सदी में विचारपूर्ण लेखन में अति–विशेषज्ञता और अपरिचित क्लिष्ट तकनीकी शब्दावली, विशिष्ट शब्दावली का अत्यधिक वर्चस्व हो चुका था।

28.3 सांस्कृतिक संस्थाएँ और प्रतीक

वैज्ञानिकों, दर्शनशास्त्रियों और कलाकारों के सांस्कृतिक इतिहास के महत्त्वपूर्ण पक्षों के बदलते सरोकारों के साथ–साथ, सांस्कृतिक संरचनाओं, जैसे धर्म, लोक आख्यान, भाषा, शिक्षा–प्रणालियों और मास मीडिया में आए कोई भी परिवर्तन भी, सांस्कृतिक परिवर्तनों के अध्ययन में अत्यन्त उल्लेखनीय स्थान रखते हैं। मानवविज्ञानी इन सांस्कृतिक संस्थाओं या प्रतीक प्रणाली की ओर संकेत करते हैं, जो इसके भागीदारों के मूल्यों और उनके वैश्विक दृष्टिकोण की संबद्ध पद्धति का प्रतिनिधित्व करती हैं। ऐसे सांस्कृतिक प्रतीकों का बहुत ऐतिहासिक महत्त्व है, न सिर्फ इसलिए कि यह सूचना मनोरंजन और आस्था या जीवन में अर्थ के लिए मानव की मूल अनिवार्यताओं को संबोधित करते हैं बल्कि इसलिए भी कि यह विभिन्न सामाजिक समूहों (वर्गों में

आपकी टिप्पणियाँ

लोकप्रिय) मूल्यों, विश्वासों, भावनाओं और सामान्यतया दिखने वाले आचार–व्यवहार के तरीकों को भी दिशा देते हैं।

परन्तु यहाँ ध्यान देने की मुख्य बात यह है कि अधिकांश समाजों में सांस्कृतिक संस्थाओं, जैसे शिक्षा और मास मीडिया, का विनियमन और नियंत्रण ज्यादातर प्रभावी आभिजात्य वर्ग के हाथों में है जो सम्पत्ति के साथ–साथ सत्ता के केन्द्रों को भी नियंत्रित करते हैं। आप जाति प्रथा, सती प्रथा इत्यादि से संबंधित हिंदु विश्वासों पर ब्राह्मणों के प्रभाव से पहले ही परिचित हैं जिसने उच्च जातियों को, विशेष रूप से प्राचीन भारत में, शूद्रों की मेहनत के फल भोगने का एकाधिकार प्राप्त किया। इसी प्रकार, आधुनिक युग में पूंजीवादी वर्ग, व्यापक जन मानस (मास मीडिया) को इस प्रकार प्रभावित करने का प्रयास करता है और प्रचलित विश्वासों और आचार–व्यवहारों को इस प्रकार ढालने का प्रयास करता है कि जिस व्यापक जन मानस का शोषण, बलपूर्वक अथवा बिना किसी बल प्रयोग के किया गया है। उस पर उनके वर्चस्व की सुविधा उनको मिलती रहे। सांस्कृतिक संस्थाओं के इस सामान्य स्वरूप में संचलन में उसकी विशिष्टताओं या 'अभिप्रायों' में अनेक विविधताएँ देखने में आती हैं। निस्संदेह पिछली सदी तेजी से परिवर्तन का काल था जब न सिर्फ शिक्षा के संदेश और निहित विषयवस्तु धर्म और लोक संस्कृति इत्यादि में मौलिक परिवर्तन आए बल्कि सभी देशों में इन प्रमुख सांस्कृतिक संस्थाओं के परस्पर संतुलन में भी अनेक परिवर्तन आये।

भाषाएँ

किसी भी संस्कृति के प्रमुख घटकों में से उसकी भाषा भी एक मुख्य घटक है। बीसवीं शताब्दी के दौरान विश्व के भाषायी मानचित्र पर जनमानस द्वारा बोली जा रहीं स्थानीय बोलियों, यहाँ तक कि संस्कृत और लैटिन जैसी प्रतिष्ठित भाषाओं में भी, नाटकीय परिवर्तन देखने में आए जो कि सदियों से विद्वानों के बीच ज्ञान के लिए विशिष्ट माध्यम रही हैं और जिन्होंने उभरती हुई राष्ट्रीय पहचानों को अभिव्यक्त करने के लिए उन क्षेत्रों द्वारा अपनाई गई विशिष्ट राष्ट्रीय भाषाओं को दिशा दी।

ऐसा अनुमान है कि आज भी विश्व में लगभग 6500 भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से लगभग आधी भाषाएँ छोटे समुदायों द्वारा बोली जाती हैं और यह पहले ही लुप्त होने की प्रक्रिया में हैं। दस प्रमुख भाषाएँ पहले ही विश्व की आधी से ज्यादा आबादी की मातृभाषाएँ हैं (स्त्रोत : फाउंडेशन फॉर एनडेन्जरड लैंग्युएनिज वेबसाइट)

हाल ही में विश्व के भाषाई समूह में परिवर्तन की एक दिलचस्प विशेषता रही है कि संपूर्ण विश्व में शिक्षित लोगों के बीच द्विभाषिकता या कम से कम दो भाषाओं को बोलने–समझने की बढ़ती प्रवृत्ति का विकास हुआ। विशेष रूप में अंग्रेजी भाषा बढ़ते वैश्वीकरण और इंटरनेट के विकास के साथ–साथ अपनाई जाने वाली द्वितीय भाषा के रूप में उभर रही है। जबकि चीनी भाषा अभी भी विश्व में सबसे बड़ा भाषाई समूह है, अंग्रेजी जानने वाले लोगों की संख्या (विश्व जनसंख्या का 10 प्रतिशत दूसरे नंबर पर है और अंग्रेजी को दूसरी भाषा के रूप में जानने वालों की संख्या विश्व में सर्वाधिक है। बढ़ती शिक्षा और प्रचार–प्रसार के प्रभाव के अधीन भाषाओं के बीच परस्पर आदान–प्रदान से हुआ मिश्रण बीसवीं सदी में भाषाओं के बीच हुआ एक अन्य मुख्य विकास रहा है। जबकि अंग्रेजी ने, फ्रांसीसी और हिंदी सहित, अन्य भाषाओं से अनेक नए शब्दों को अपनाया है, तो भारत

के शिक्षित वर्ग में हिंगलिश या कहें हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी की मिली–जुली बोली जाने वाली भाषा का विकास भी इस संदर्भ में रेखांकित किये जाने योग्य है।

लोक परंपराएँ

बीसवीं सदी के दौरान विभिन्न समाजों की लोकप्रिय संस्कृति की लोक कथाओं की स्थितियों में भी बड़े परिवर्तन देखने में आए। पिछली सदी के दौरान विकासशील जगत में दर्जनों पारम्परिक कलाएँ और मनोरंजन के साधन, जैसे–कठपुतलियों के प्रदर्शन कहानियां सुनाना, पौराणिक नाटक, लोक नृत्यों आदि, को धीरे–धीरे हाशिये पर सरका दिया गया है। पुराने चले आ रहे गीत, कहानियां और पौराणिक आख्यान, जिन्हें विभिन्न समुदायों द्वारा अपने विचारों के सम्प्रेषण और भावी पीढ़ियों के लिए मूल्यों के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है, तेजी से लुप्त हो गए हैं और उनके स्थान पर आधुनिक प्रचार–प्रसार के माध्यम से व्यावसायिक रूप में तैयार किए गए मनोरंजन और समाचार के कार्यक्रमों ने अपनी जगह बना ली है।

फिर भी, राज्यों और नागरिक एजेंसियों द्वारा, जैसा कि भारत में किया जा रहा है, अब वित्तीय सहायता और संस्थागत समर्थन से इसे बचाने का प्रयास किया जा रहा है।

(मास मीडिया) जन संचार माध्यम

दूसरी तरफ रेडियो, सिनेमा, ग्रामोफोन रिकॉर्ड, टेलीविजन, कैसेट और सीडी और कम्प्यूटरों और मोबाइल फोनों ने तेजी से जीवन में जगह बनाई है और हमारे सूचना–प्राप्ति के तरीकों में, मनोरंजन के साधनों में और परस्पर संबंध स्थापित करने में या यहां तक कि सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिए हैं।

यद्यपि सिनेमा और टेलीविजन जैसे कुछ नए माध्यमों को चार्ली चैपलिन, सत्यजीत राय और स्टीवन स्पिलबर्ग जैसे सदी के महान कलाकारों द्वारा अत्यन्त उच्च कोटि के कलात्मक फिल्मों और शैक्षिक कार्यक्रमों के निर्माण के लिए प्रयुक्त किया गया है। व्यापक श्रोता वर्ग के लिए प्रचार और प्रतियोगिता के लिए अधिकाधिक सनसनी परक सेक्स आधारित और हिंसात्मक कार्यक्रमों को प्रोत्साहन दिया है।

जन संचार (मास कम्युनिकेशन) और मनोरंजन के इन नए चैनलों ने जो ध्यान आकर्षित किया है वह अपने आप में ऐतिहासिक है। अतः एक सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि 1980 में अमेरिका में अधिकांश परिवारों के पास दो टी.वी सेट थे और वहां का एक साधारण बालक अपनी पढ़ाई या खेलों से दुगुना समय टेलीविजन के सामने गुजारता था।

धर्म

पारंपरिक कला के रूपों और लोक आख्यानों के अतिरिक्त, एक अन्य मुख्य सांस्कृतिक संस्था धर्म हैं जिसकी भूमिका पिछली सदी से अधिकांश समाजों में सीमित हुई है। विकसित और विकासशील दोनों देशों में, पहले से प्रभावी धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोणों और निष्ठाओं जैसे मानववाद, राष्ट्रवाद और लोकतंत्र ने पिछली सदी से लोगों में व्यापक आंदोलनों और प्रतिबद्धताओं के लिए प्रेरित किया है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि

आपकी टिप्पणियाँ

राष्ट्रवादी (जो खुलेआम राष्ट्र राज्य के प्रति निष्ठा का दावा करते हैं) या मानवतावादी (जो मानव जीवन को मृत्यु के उपरांत जीवन से ज्यादा मूल्य देते है), साथ–साथ धार्मिक नहीं हो सकते। निस्संदेह, लगभग सभी देशों में, अधिकतर लोग (विशेष रूप से महिलाएँ) आज भी स्वयं को आस्थावानों में ही समझते हैं। उदाहरणार्थ 1981 में यू एस में धार्मिक आस्थाओं पर हुए एक सर्वेक्षण में, लगभग केवल 10% लोगों ने स्वयं को नास्तिक बताया। इसके अतिरिक्त, तीर्थ यात्राओं और व्यक्ति साहित्य और भजनों इत्यादि में पिछली सदी के दौरान अत्यधिक वृद्धि देखने में आई है।

फिर भी, दिन–प्रतिदिन के जीवन में धर्म का सिकुड़ता हुआ प्रभाव इस तथ्य में भी स्पष्टतया दिखाई देता है कि अभिवादन (ग्रीटिंग्स), खानपान, उत्सवों, सार्वजनिक समारोहों इत्यादि में, विशेष रूप में शहरों में धर्म की व्याप्ति उस रूप में नहीं है जिस रूप में यह सौ वर्ष पहले हुआ करती थी। दूसरे, धार्मिक मूल्यों और दृष्टिकोणों ने राज्य कला इत्यादि जैसी अन्य संस्थाओं को पूरी तरह वैसे संबद्ध नहीं किया है जैसे यह पहले करता था और आज हमारी अनेक प्रथाएँ वास्तव में उन सामान्य धार्मिक विश्वासों के बिल्कुल विपरीत हैं। अतः केवल एक सदी पूर्व, ज्यादातर विवाह, यहाँ तक कि पश्चिम में भी, चर्च में होते थे और बपतिस्मा (ईसाई धर्म में नामकरण संस्कार), हर नवजात शिशु के लिए अनिवार्य था। 1990 तक यह देखने में आया कि फ्रांस में केवल 30 जोड़ों की चर्च में शादियां हुईं। तलाक और गर्भपात जिसकी चर्च के द्वारा मनाही थी, अब न सिर्फ पश्चिम के अनेक देशों में विधिसम्मत बना दिए गए थे बल्कि अब ज्यादा से ज्यादा लोग इन्हें स्वीकार करने लगे थे और अब इन्हें कलंक नहीं समझा जाता था। एशिया और अफ्रीका के अनेक देशों में भी इसी प्रकार की प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं।

शिक्षा

आज जबकि धर्म ने बढ़ते सामाजिक क्षेत्रों में सक्रिय नियमों और आदर्शों को परिभाषित करना बंद कर दिया है, इसके समानान्तर धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित आधुनिक शिक्षा में चमत्कारिक वृद्धि देखने में आई है। पढ़ने, लिखने और गणना करने में प्रवीण और अपने राष्ट्रीय इतिहास और विरासत पर गर्व करने वाले नागरिकों को न सिर्फ राज्य और औद्योगिक तथा अर्थव्यवस्था के सर्विस सैक्टरों में आधुनिक पदों पर तैनात करने की सख्त जरूरत महसूस की गई है बल्कि ऐसे नागरिकों के एक समरूप निकाय बनाए जाने की भी जरूरत भी महसूस की गई है जो अपने राष्ट्र राज्यों के प्रति निष्ठावान हों।

बहुत से पश्चिमी देशों ने उन्नीसवीं सदी में ही स्कूली शिक्षा को अनिवार्य और सस्ती अथवा निःशुल्क कर दिया था। पिछली सदी में एशिया और अफ्रीका के नव–स्वतंत्रता प्राप्त राष्ट्रों ने भी इसी दिशा में प्रयास किए, यद्यपि सीमित संसाधनों और उपनिवेशवादी भारी बोझ और उनकी शिक्षा प्रणालियों में विदेशी पैटर्न के कारण इन्हें बहुत कम सफलता प्राप्त हुई। हमारे देश में 1980 तक भी लगभग आधी आबादी अशिक्षित थी और सिर्फ पिछले दो दशकों में अशिक्षितों की संख्या में औसतन 25% की कमी आई है।

इस दौरान बीसवीं सदी के मध्य तक आते–आते विश्वविद्यालयी स्तर की शिक्षा में भी तेजी से विस्तार हुआ। अतः 1939 में ब्रिटेन और फ्रांस जैसे विकसित देशों में कुल आबादी के 0.1% लोगों ने कॉलेजों में अपने नाम लिखवाये। तथापि, 1990 के दशक

तक इन राष्ट्रों की कुल आबादी की लगभग 2 प्रतिशत आबादी कॉलेज की शिक्षा प्राप्त कर रही थी (लगभग 20 गुणा वृद्धि)। निस्संदेह, 1960 और 1980 के दौरान, विकासशील देशों में भी उच्च शिक्षा का विस्तार चमत्कारिक गति से हुआ और इसी अनुपात में छात्रों ने निर्धन देशों में भी शीघ्र ही विश्वविद्यालयों में अपने नाम लिखवाये, यद्यपि उनकी व्यावसायिक और प्राथमिक शिक्षा अभी भी अविकसित ही थी। इसके अलावा, इनकी अर्थव्यवस्थाओं में लघु स्तर के संगठित क्षेत्र के कारण शिक्षित बेरोजगारों की समस्या भी इन देशों में अत्यधिक विकट थी।

विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी सामाजिक और सांस्कृतिक विरोधों में सक्रिय थे। व्यापक पैमाने एवं समकालिक छात्र विरोध 1968 में न्यूयॉर्क और सान फ्रांसिस्को से लेकर पैरिस और पेरुग्वे तक जंगल की आग की तरह फैला था, इसकी मौलिकता के लिए आज भी याद किया जाता है क्योंकि इन्होंने न सिर्फ अपने–अपने देशों में राज्य की शोषणकारी नीतियों और शैक्षिक विशिष्ट वर्ग का विरोध किया बल्कि वियतनाम में यू एस के हस्तक्षेप को चुनौती देकर बृहदाकार अन्तरराष्ट्रीयवाद और युद्ध विरोधी साम्राज्यवाद, विरोध भावनाओं को जागृत किया। फिर भी, हाल ही के बीते दशकों में विशेष रूप से सोवियत संघ के विघटन और पलायनवादी मनोरंजन चैनलों की बाढ़ आने के बाद, पूरे विश्वस्तर पर विद्यार्थी आंदोलनों में कुछ शांति की स्थिति दिखाई देती है।

पाठगत प्रश्न 28.3

1. दिये गए पाठ में 'सांस्कृतिक संस्थाएँ' शब्द का क्या अभिप्राय है? संस्कृति की कुछ प्रमुख संस्थाओं के नाम लिखें।

2. बीसवीं सदी के दौरान विश्व (ग्लोब) के भाषाई पैटर्न में किस प्रकार के परिवर्तन आए?

3. जन संचार (मास कम्युनिकेशन) के विभिन्न नए चैनलों के नाम लिखें जिन्होंने आजकल के समाचार, सूचना प्राप्त करने और मनोरंजन और बातचीत के तरीकों में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है।

28.4 वैश्वीकरण

आधुनिक शिक्षा, मास मीडिया (जन संचार माध्यम) और धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक सिद्धांतों के उदय ने, बीसवीं सदी के एक अन्य महत्त्वपूर्ण विकास में योगदान दिया है और जिसे वैश्वीकरण का नाम दिया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया को बढ़ते बहु–राष्ट्रीय व्यापार, उत्पादन और वित्त के साथ–साथ राजनीतिक और कल्याणकारी एजेंसियों, जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ और व्यावसायिक निकायों, जैसे विश्व सामाजिक मंच (वर्ड सोशल फोरम) ने परस्पर–निर्भरता के रूप में अत्यधिक संख्या में व्यक्तियों को जोड़ने वाले एक समेकित विश्व के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें धनी लोगों को महत्त्व दिया गया।

आपकी टिप्पणियाँ

वैश्वीकरण बहु–राष्ट्रीय निगमों के विकास, नगरों के मॉल्स और इंटनेट पर संपूर्ण विश्व से आये सामान और सेवाओं की उपलब्धता, विचारों, समाचारों और सूचनाओं को पूरे विश्व में सस्ती दरों पर और तुरंत भेजा जाना, ग्लोबल सामानों और फैशन मार्किट, खानपान और मनोरंजन में ग्लोबल झलक इत्यादि सभी कुछ स्पष्टतया आज के वैश्वीकरण को ही दर्शाते हैं। यहां यह समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि, बीसवीं सदी के दौरान, ग्लोबलाइजेशन का उद्भव अचानक से नहीं हुआ। विश्वस्तर पर व्यापारिक नेटवर्क और चिकित्सा और तकनीकी ज्ञान के प्रवाह की धारा के अवशेष प्राचीन कालावधियों में भी खोजे जा सकते हैं। यूरोपियन शक्तियों द्वारा गैर–यूरोपियन देशों के औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया ने बहुत अद्भुत ढंग से विश्व के असमान एकीकरण को बढ़ावा दिया जो सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में शुरू हुई थी। परन्तु, शक्तिशाली और सुदूर क्षेत्रों तक पहुंच वाले ट्रांसनेशनल कार्पोरेशनों और संगठनों का विकास और ग्लोबल मीडिया नेटवर्क का विकास खासतौर पर केवल पिछली शताब्दी के दौरान ही हुआ।

जबकि, ये न्यूज चैनल सामान, सेवाओं और सूचना के प्रवाह को संभव बनाते हैं और आशा की जा सकती है कि यह कुछ क्षेत्रों में और अधिक चुनाव की सुविधा और शायद समृद्धि भी लायेंगे, परन्तु वास्तविकता यह है कि इन्होंने न सिर्फ अत्यंत प्राचीन सांस्कृतिक पद्धतियों और सामाजिक प्रथाओं को तहस–नहस कर दिया है बल्कि यह संपूर्ण विश्व में धनियों और निर्धनों के बीच असमानताओं को और अधिक तेज करने के अतिरिक्त, संपूर्ण विश्व को सामान्यतया पश्चिमी आदतों और मूल्यों की तरफ मोड़ रहे हैं।

दुर्भाग्यवश, संपूर्ण विश्व में पश्चिमी विचारों और आदतों के पुनः आगे आने से, स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र के महान विचारों का गैर–पश्चिमी विश्व में स्थानांतरण, पश्चिमी व्यक्तिवाद, भौतिकतावाद, संयुक्त परिवार और सामुदायिक संबंधों के टूटने, एकाकीपन, मानसिक विक्षिप्तता इत्यादि जैसे संक्रमणों का प्रसार पहले की तुलना में अत्यधिक हो गया है। इससे भी ऊपर जाकर देखें तो अनेक विकासशील देशों में, बेलगाम गरीबी, भ्रष्टाचार, अपराधीकरण, निरंकुशता या तानाशाही समान रूप से अभी भी परिस्थितियों को अधिकाधिक जटिल बना रही हैं।

इस परिदृश्य में, युवा पीढ़ी के कंधों पर बड़ी भारी जिम्मेदारी है कि वे मौजूदा प्रलोभनों के विकल्पों में से सही चुनाव करें और इस नई सदी में सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तनों में आशंकित तेजी आने के तूफान के बीच से निकलकर अपने–अपने देशों की दिशा निर्दिष्ट करें।

आपने क्या सीखा

नेताओं, युद्धों और क्रांतियों का समय–समय पर विश्व पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है, परंतु जनसांख्यिकी और सामाजिक श्रेणियों में होने वाले धीरे–धीरे और अप्रत्यक्ष परिवर्तन और व्यापक स्तर पर समन्वित विश्वास, मूल्य और आचार–व्यवहार भी समेकित रूप से परिवर्तन लाते हैं।

बीसवीं शताब्दी दूसरे किस्म की प्रमुख तब्दीलियों का भी एक अद्वितीय काल रहा है। अतः इस अवधि के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी की गति में चमत्कारिक विकास हुआ, जबकि

आपकी टिप्पणियाँ

हुए, परन्तु प्रमुख परिवर्तनों के उदाहरणों में शिक्षा का प्रसार और शैक्षिक संस्थाओं के साथ–साथ मास मीडिया के जरिये विचारों का प्रसार और मनोरंजन, समाचारों और ज्ञान के उत्पादों में बढ़ता वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) सम्मिलित है।

2. सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा 'संस्कृति' शब्द को दो पृथक तरह से प्रयुक्त किया गया है : कला, साहित्य, दर्शन इत्यादि जैसे सर्जनात्मक कार्यों का संदर्भ देने के लिए और किसी समुदाय के सामान्य मूल्यों, विश्वासों और व्यवहार के तरीकों को रेखांकित करने के लिए, जो कि उसने साझा इतिहास, भौतिक परिवेश और भाषा की परंपराओं और लोक आख्यानों इत्यादि से हासिल किए होंगे। जबकि संस्कृति की पहली धारणा विशेष रूप से उच्च कोटि के प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों से संबद्ध है तो दूसरी ओर कुल मिलाकर सामाजिक समूहों से संबंधित है। तथापि दोनों धराणाएं, मुख्यतः मानसिक घटनाक्रम के संबंध में ही बात करती हैं।

3. संस्कृति शब्द की अभिव्यक्ति उतनी ही कठिन है, जितनी कि यह सामाजिक विज्ञानों के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि विभिन्न विचारकों ने इसे विविध प्रकार से प्रयुक्त किया है और यह शब्द उन इन्द्रियगोचर घटनाक्रमों की ओर संकेत करता है, जो न तो प्रत्यक्ष हैं और न ही उन्हें आंका जा सकता है।

28.2

1. बीसवीं सदी के विशिष्ट वैज्ञानिकों में शामिल हैं : मैडम क्यूरी (जिसने रेडिएशन की प्रक्रिया पर काम करते समय अपने जीवन का बलिदान कर दिया), अलबर्ट आईंस्टीन (सापेक्षता के सिद्धांत का श्रेय इनको जाता है); फिनमैन (सब एटॉमिक पार्टिकल्स के तरंग सिद्धांत की खोज इन्होंने की) और चार्ल्स बैज (जिसने कम्प्यूटरों के सृजन में अग्रणी कार्य किया)।

2. आधुनिकतावाद, सामाजिक यथार्थवाद, उत्तर आधुनिकतावाद

3. बरट्रैंड रसेल, नोएम चोम्स्की, ई.पी. थाम्पसन, अमर्त्यसेन

28.3

1. यहाँ सांस्कृतिक संस्थाओं का अभिप्राय है प्रतीक प्रणालियाँ (सिम्बल सिस्टम्स) जिन्हें किसी समुदाय की अभिवृत्तियों (रुख), विश्वासों और मूल्यों को आकार देने के लिए तैयार किया गया था। सभी समाजों में सामान्यतया पाए जाने वाली कुछ मुख्य सांस्कृतिक संस्थाएं हैं, धर्म, शिक्षा, भाषा, लोक आख्यान और रीति–रिवाज और जनसंचार (मास कम्युनिकेशन) के साधन।

2. बीसवीं सदी के दौरान एशियन और अनेक अफ्रीकन देशों में भी, स्थानीय बोलियों और प्रतिष्ठित भाषाओं से ऊपर उठकर राष्ट्रीय भाषाओं या मुख्य प्रादेशिक भाषाओं में और अधिक संघटन देखने में आया। इसी के साथ–साथ अंग्रेजी वैश्वीकृत विश्व को जोड़ने वाली एक मुख्य भाषा के रूप में उभरी है।

3. टेलीफोन, रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन, टेप रिकॉर्डर, काम्पैक्ट डिस्क, कंप्यूटर, कम्युनिकेशन, सैटेलाइट और मोबाइल फोन।

कलाओं, दर्शन और साहित्य में विश्व स्तर पर आंदोलन हुए, जैसे आधुनिकतावाद, सामाजिक यथार्थवाद और उत्तर–आधुनिकतावाद और सर्वव्यापी (यूनीवर्सल) सांस्कृतिक संस्थाएं, जैसे–भाषा, धर्म, क्रिया, शिक्षा और मास मीडिया इत्यादि के कार्य–व्यवहार में बहुत बड़े स्तर पर मात्रात्मक और गुणात्मक परिवर्तन आए।

चारों ओर तीव्र गति से होने वाले इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप, अब संपूर्ण विश्व भी अधिकाधिक वैश्वीकृत (ग्लोबलाइज्ड) बन रहा है। इसमें न सिर्फ विश्व के अनेक देशों में बढ़ता एकीकरण वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और उपभोग के संदर्भ में ही सम्मिलित नहीं है, बल्कि इनमें समाचारों, सूचनाओं, विचारों और मनोरंजन के साधनों के जरिए एकीकरण का भी समावेश है।

जबकि, बढ़ती हुई सांस्कृतिक तब्दीलियां आज के युवाओं को सीखने और गतिशीलता के नए अवसर प्रदान करती हैं, इसके साथ ही उनके समक्ष बढ़ती ग्लोबल प्रतियोगिता, अहंकार में वृद्धि, उपभोक्तावाद और भोगवाद की चुनौतियां भी खड़ी करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप परिवार और देश से परायापन की स्थितियां पैदा करती हैं और एक न्यायपूर्ण, समृद्ध और मुक्त समाज बनाने के लिए सामूहिक प्रयास करने की चुनौती भी देती हैं।

पाठांत प्रश्न

1. बीसवीं सदी के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हुआ अभूतपूर्व विकास एक अमिश्रित वरदान नहीं था। समीक्षा करें।
2. इस तथ्य के बावजूद कि विश्व में अधिकतर लोग अभी भी स्वयं को धार्मिक कहते हैं; सार्वजनिक जीवन में धर्म की भूमिका, हाल के कुछ समय में काफी कम हुई है। व्याख्या करें?
3. बीसवीं सदी के दौरान हुए सांस्कृतिक परिवर्तन में शिक्षा और विद्यार्थियों की भूमिका का उल्लेख करें।
4. वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण में परस्पर संबंध की व्याख्या करें और साथ ही यह भी उल्लेख करें कि भारत जैसे देशों की संस्कृतियों में यह किस प्रकार की चुनौतियाँ और अवसर प्रदान करती हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

28.1

1. बीसवीं शताब्दी में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों के उदाहरणों में 1917 में सोवियत यूनियन का जन्म और 1947 से, भारत के नेतृत्व में, एशिया और अफ्रीका के औपनिवेशिक राष्ट्रों की स्वतंत्रता शामिल है। इसी कालावधि के दौरान धीरे–धीरे

पाठांत प्रश्नों के संकेत

1. देखें 28.2
2. देखें 28.3
3. देखें 28.3.6
4. देखें 28.4

परियोजना कार्य

सांस्कृतिक परिवर्तन प्रायः धीमे और अप्रत्यक्ष होते हैं। परंतु 20वीं सदी के दौरान संस्कृति में भी पहले की तुलना में बहुत तेज गति से परिवर्तन देखनें में आए। अपने पूर्वजों से पूछे और उनके जीवनकाल में उनके द्वारा देखे गए कुछ सांस्कृतिक परिवर्तनों के कुछ उदाहरण दें, जिनसे इन परिवर्तनों को रेखांकित किया जा सके।

आजकल भारत में भारतीय संस्कृति के संदर्भ में सांस्कृतिक मूल्यों, कलाओं, संस्थाओं और रीति–रिवाजों की पृष्ठभूमि में मौजूद अनेकता में एकता के कुछ तत्वों का उल्लेख करें।

शब्दावली

संस्कृति – एक ओर किसी समुदाय के साझा मूल्य, विश्वास और रीति–रिवाज और दूसरी तरफ कला, साहित्य, दर्शन शास्त्र या विज्ञान के क्षेत्र में हुए सृजनात्मक कार्य।

वैश्वीकरण – सभी देशों के आर–पार (क्रॉस कंटरी) संचार, मनोरंजन, व्यापार और राजनीति के बढ़ते नेटवर्क के माध्यम से बढ़ता हुआ विश्व एकीकरण।

जरमॉन – विद्वता प्रदर्शन के लिए दिन–प्रतिदिन में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के स्थान पर तकनीकी और अपरिचित शब्दों को अत्यधिक प्रयोग में लाना।

द्विभाषीकरण – समान क्षमता के साथ दो भाषाओं का प्रयोग करने और समझने की योग्यता।

आधुनिकतावाद – बीसवीं शताब्दी का एक बड़ा सौंदर्यपूर्ण रुझान जिसे आधुनिक समाज को आंतरिक पीड़ाओं और समस्याओं की अभिव्यक्ति के लिए तलाश किया गया था।

धर्म निरपेक्षता – बढ़ती नास्तिकता को अनिवार्य रूप में समाविष्ट किए बगैर सार्वजनिक जीवन में धर्म की घटती हुई भूमिका।